जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. बी.एस. द्विवेदी
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक– 16
दिनांक–13.02.2026

जनेकृविवि ने किसानों हेतु पारंपरिक फसलों की कई किस्में विकसित की –कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा
किसानों को पादप किस्म संरक्षण व कृषक अधिकार प्रमाण पत्र प्रदान किए

जबलपुर 13 फरवरी, 2026। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के जेनेटिक्स एण्ड प्लांट ब्रीडिंग विभाग द्वारा पादप किस्म संरक्षण एवं कृषक अधिकार विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण–सह–जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा के मुख्यआतिथ्य एवं संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी.के. कौतु की अध्यक्षता में स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. टी.आर. शर्मा एवं अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ. जयंत भट्ट विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। कार्यक्रम में देशी धान की अलग–अलग किस्मों को उगाने वाले किसानों को कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा ने रोली का टीका लगाकर एवं पगड़ी पहनाकर उन्हें पादप किस्म संरक्षण व कृषक अधिकार प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने मुख्यअतिथि की आसंदी से कहा कि पादप किस्म संरक्षण एवं कृषक अधिकार अधिनियम के प्रावधानों, महत्व तथा कृषकों एवं प्रजनकों के अधिकारों के प्रति जागरूक करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। कुलपति डॉ. मिश्रा ने कहा कि देश और प्रदेश के कृषकों हेतु जनेकृविवि लगातार धान सहित अन्य पारंपरिक फसलों की नई–नई किस्मों को विकसित कर रहे हैं, जिससे किसान भाई कम लागत में अधिक उत्पादन कर दोगुना मुनाफा कमा सकें।

सचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी.के. कौतु ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि देश में धान की सैकड़ों किस्में हैं, लेकिन पारंपरिक देशी धान की किस्मों को विकसित किया किया जा रहा हैं। जिससे विलुप्त होती धान की देशी किस्मों को एक बार फिर से किसान उगा सके। आपने कहा कि विलुप्त होती लुचई सहित अन्य देशी धान की किस्मों को जीवित कर कम ऊंचाई एवं कम पानी में अच्छी पैदावार करने हेतु विकसित किया जा रहा है, जिससे किसानों को पुरानी पारंपरिक किस्मों को एक बार फिर से उगाकर लोगों की थाली तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। आपने मोटे अनाज कोदो–कुटकी की ओर किसानों का रूझान अधिक से अधिक बढ़ाने हेतु अन्य महत्पूर्ण जानकारी प्रदान की।

संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. टी.आर.शर्मा अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से वैज्ञानिक किसानों को पुरानी पारंपरिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु प्रेरित कर रहे हैं, जिससे किसान प्राकृतिक खेती और अपनी पारंपरिक खेती कम लागत में उगाकर अधिक मुनाफा कमा सकें।

गौरतलब है कि जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में आयोजित पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण पर आधारित एक दिवसीय प्रशिक्षण–सह–जागरूकता कार्यक्रम की सफलता में परियोजना की प्रधान अन्वेषक डॉ. स्तुति शर्मा का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। उनके सतत परिश्रम, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और किसान–केंद्रित कार्यशैली के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय ने PPV&FR अधिनियम के अंतर्गत मध्यप्रदेश से कृषक किस्मों के पंजीकरण का ऐतिहासिक गौरव प्राप्त किया है। डॉ. शर्मा ने वैज्ञानिकों और किसानों के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करते हुए पारंपरिक ज्ञान, देशी बीजों और स्थानीय किस्मों को कानूनी संरक्षण एवं

राष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में यह पहल केवल एक औपचारिक कार्यक्रम न रहकर किसानों के अधिकारों के सशक्तिकरण का जन–आंदोलन बन गई। उनके प्रयासों से किसानों में अपने बीज, अपनी किस्म और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे कृषि जैव–विविधता के संरक्षण और टिकाऊ कृषि की दिशा में ठोस कदम संभव हुए हैं। यह उपलब्धि न केवल जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के लिए, बल्कि प्रदेश के किसान समुदाय के लिए भी गर्व का विषय है।

वरिष्ट वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश तिवारी ने स्वागत उद्‌बोधन एवं कार्यक्रम की रूपरेखा सहित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. आशीष कुमार गुप्ता द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. रजनी तोमर, डॉ. प्रमोद गुप्ता, डॉ. शिवरामाकष्णन, डॉ. राधेश्याम शर्मा, डॉ. विनोद गोयल, शिखा उपाध्याय, प्रशांत नामदेव, आयुषी सोनी सहित बड़ी संख्या में किसान और विद्यार्थी उपस्थित रहे।